फ़िल्म ईज़ीन

फ़रवरी 2025, अंक 02, वर्ष -02

सिनेमाहौल

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

याद: रश्मि रविजा

प्रेम और रोमांस

रश्मि रविजा, निर्देश निधि,
कुमार विजय, चेतन कश्यप,
जवरीमल्ल पारख, निदा फ़ाज़ली,
डॉ चंद्र प्रकाश द्विवेदी,
डॉ प्रकाश हिंदुस्तानी, डॉ रक्षा गीता,
डॉ सुप्रिया पाठक, पंकज सुबीर,
पल्लवी त्रिवेदी, फ़रीद ख़ाँ,
मनोरमा सिंह, माया मिश्रा,
यूनुस ख़ान, रवि शेखर,
राहुल उपाध्याय, विमल चंद्र पांडेय,
शशि सिंह, सौम्या बैजल

आवरण: आर वर्क

cinemahaul

फरवरी 2025

वर्ष 2 अंक 2

सिनेमाहौल

फ़िल्म ईज़ीन

संकलन और संपादन

अजय ब्रह्मात्मज

आवरण विषय: प्रेम और रोमांस

कवर : रविराज पटेल

अनुक्रम

मेरी बात 5

‘काश! मुझे यह सब ना लिखना पड़ता रश्मि’ 7

निर्देश निधि

साथ रही फ़िल्में 12

रश्मि रविजा

DDLJ: अच्छा है कि 'राज' हमारी यादों में जिंदा एक फिल्म किरदार है 30

रश्मि रविजा

वसंतराग और हिन्दी फिल्में 35

कुमार विजय

इश्क के तीन सीजन : ‘ऐसे क्यूँ...’ 40

चेतन कश्यप

तीसरी कसम : प्रीत बनाके तूने जीना सिखाया 51

जवरीमल्ल पारख

मुहब्बत 113

निदा फ़ाज़ली

हिंदी फिल्मों में प्रेम की अनिवार्यता 119

डॉ चंद्रप्रकाश द्विवेदी

ये मोह मोह के धागे, तेरी उँगलियों से जा उलझे 124

डॉ प्रकाश हिन्दुस्तानी

घर : एक प्रेम कथा 132
डॉ रक्षा गीता

प्रेम का राजनीतिक अर्थशास्त्र और हिन्दी सिनेमा 142
डॉ. सुप्रिया पाठक

न जाने क्यूँ, होता है ये ज़िंदगी के साथ- एक मीठी-सी उदासी की लरज का गीत 152
पंकज सुबीर

प्रेम कविता: तुम जहां भी हो 160
पल्लवी त्रिवेदी

'लव स्टोरीज़' यानी व्यवस्था से टकराने का साहस 162
फ़रीद ख़ाँ

और भी दुख हैं ज़माने में मोहब्बत के सिवा 172
मनोरमा सिंह

है सूफियाना ये दास्तां… लैला मजनू (2018) 178
माया मिश्रा

रूमानियत का परचम लहराते शैलेंद्र 185
यूनुस ख़ान

मीठी नयनाभिरामी फ़िल्म चितचोर 194
रवि शेखर

क्या है प्रेम? 200
राहुल उपाध्याय

उर्मिला मातोंडकर 204
विमल चंद्र पाण्डेय

भारतीय सिनेमा: प्रेम, प्लेटोनिक रिश्ते और आध्यात्मिकता की यात्रा 209
शशि सिंह

प्रेम की बदलती प्रवृति और अभिव्यक्ति 231
सौम्या बैजल

बेतरतीब Bollywood 239
अजय ब्रह्मात्मज

मेरी बात

पिछले साल की तरह इस साल भी फरवरी महीने के अंक का आवरण विषय प्रेम और रोमांस है। चूंकि 'तीसरी कसम' पर जवरीमल्ल पारख का एक लंबा लेख इस अंक में शामिल है, इसलिए कवर पर उस फिल्म से हीरामन और हीराबाई की तस्वीर ली गई है। प्रेम और रोमांस की यह अनूठी फिल्म है। फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी 'मारे गए गुलफाम उर्फ़ तीसरी कसम' पर आधारित फिल्म 'तीसरी कसम' के निर्माता शैलेंद्र और निर्देशक बासु भट्टाचार्य थे। साहित्य सिनेमा के अध्येताओं के लिए अत्यंत उपयोगी है।

प्रेम और रोमांस हिंदी सिनेमा का शाश्वत विषय है। समय के साथ इसके रूप-स्वरूप में परिवर्तन आया है। चरित्र और चित्रण भी बदला है, लेकिन मूल भाव मोहब्बत बना हुआ है। 21वीं सदी के तीसरे दशक में मोहब्बत की चुनौतियों और स्वीकृतियों में अनेक अड़चनें और मुश्किलें हैं। युवा पीढ़ी अपने तई इससे जूझ रही है। अपनी राह निकल रही है। किशोर और युवा पीढ़ी की प्रतिक्रियाओं में एक बेपरवाही दिखती है। इस बेपरवाही की तहों में जाने पर अनेक भेद खुलते हैं। इन भेदों में युवा पीढ़ी की भ्रांति उलझन और बेचैनियां है। फिल्मों में अभी उन्हें सही अभिव्यक्ति और प्रतिनिधित्व नहीं मिल पा रहा है। क्राइम और थ्रिलर के इस दौर में शुद्ध रोमांस की

फिल्में नहीं आ रही है। नफरत के नवाचार के इस माहौल में फिल्मों में भी प्रेम दुर्लभ हो रहा है।

मैं इस अंक के सभी लेखकों का आभारी हूं। उनके सहयोग के बगैर यह अंक इस रूप में संभव नहीं होता। इस अंक में हमने पल्लवी त्रिवेदी से विशेष आग्रह किया कि वह एक प्रेम कविता दें। अगर आपको यह प्रयोग अच्छा लगे तो आगे के अंकों में चंद कविताएं और कहानियां भी हम नियमित शामिल करेंगे।

प्रेम और रोमांस का यह अंक रश्मि रविजा को समर्पित है। सिनेमाहौल फ़िल्म ईज़ीन को रश्मि रविजा का नियमित सहयोग मिला। इस महीने 8 फरवरी को उनका निधन हुआ। सिनेमाहौल को उनकी कमी महसूस होती रहेगी। उन्हें याद करते हुए सिनेमा पर लिखा उनका पहले लेख के साथ 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' पर लिखा उनका लेख हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं। उन पर याद संस्मरण निर्देश निधि ने लिखा है।

और अंत में नीलाभ श्रीवास्तव और गरिमा सिन्हा को विशेष धन्यवाद। उनके सहयोग से हम दूसरे साल का दूसरा अंक ला रहे हैं।

आपकी प्रतिक्रियाओं और सुझावों का स्वागत है।

फिल्में देखें, फिल्में पढ़ें और फिल्मों पर लिखें

अजय ब्रह्मात्मज

फरवरी 2025